वाड़ी विकास परियोजना

अनार

वार्षिक कार्यक्रम कैलेण्डर

क्र.सं.	माह	किये जाने वाले कार्य
1.	**जनवरी** (पौष-माघ)	• नये स्थापित बगीचे में 20 दिन में एक बार सिंचाई करें। • पुराने बगीचे में जहाँ जुलाई - अगस्त (मृग बहार) की बहार लेनी है वहाँ सिंचाई बन्द करें। • मिली बग कीट नियन्त्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस 1.5 ml प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें।
2.	**फरवरी** (माघ-फाल्गुन)	• नये बगीचे में 20 दिन में एक बार सिंचाई करें। • थावले में गुड़ाई कर खरपतवार निकालें। • नये बगीचे मे जहाँ दो लाइनों के बीच रिक्त स्थान है, वहाँ सब्जियों की फसल की तैयारी शुरू करें।
3.	**मार्च** (फाल्गुन-चैत्र)	• नये बगीचे में 15 दिन के अन्तर पर सिंचाई करें। • पुराने बगीचे में रोगी तथा आपस में उलझी टहनियों को हटायें।
4.	**अप्रेल** (चैत्र-वैशाख)	• 15 दिन में एक बार सिंचाई करें। • थावले में गुडाई कर खरपतवार निकाले। • नये बगीचे स्थापना हेतु 4½ x 4½ mtr दूरी पर खेत में चिन्ह लगाकर खड्डे खोदें।
5.	**मई** (वैशाख-ज्येष्ठ)	• 15 दिन में एक बार सिंचाई करें। • जहाँ फसल लेनी है वहाँ प्रति पौधा 10 कि.ग्रा. देशी खाद, 250 ग्राम सुपर फास्फेट का उपयोग करें। • 100 ग्राम यूरिया, 50 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश दे व गुड़ाई करें। • मृग बहार लेने की तैयारी करें। • नये बगीचे लगाने हेतु खोदे गये खड्डो में 15 किलो गोबर की खाद, 1 किलो सुपर फास्फेट प्रति खड्डा उपयोग करें। बाहर निकली मिट्टी के साथ मिलाकर भराई करें।
6.	**जून** (ज्येष्ठ-आषाढ़)	• जहाँ खड्डों की भराई का कार्य पूरा नहीं हुआ है वहाँ देशी खाद व उर्वरक का उपयोग करते हुए खड्डों की भराई करें। • 15 दिन पर एक बार पुराने बगीचे की सिंचाई करें।
7.	**जुलाई** (आषाढ़-सावन)	• अच्छे पौधों की व्यवस्था कर, नये बनाए खड्डों में 2-3 बारिश होने पर बुवाई करें। पौधा खड्डे के मध्य में लगावें। • नये बगीचों में कम अन्तराल पर सिंचाई करें।
8.	**अगस्त** (सावन-भाद्रपद)	• अनार की तितली कीट रोकथाम हेतु मोकोक्रोटोफॉस 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें। • आवश्यकता होने पर सिंचाई करें। • जहाँ फसल लेनी है वहाँ यूरिया 200 ग्राम प्रति पौधा देवें।
9.	**सितम्बर** (भाद्रपद-अश्विन)	• अनार की तितली, बरूथी कीट की रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफॉस 1.5 ml प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें। • आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। • पत्ती धब्बा तथा फल सड़न बीमारी से रोकथाम हेतु मेनकोज़ेब दवा 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें।
10.	**अक्टूबर** (अश्विन-कार्तिक)	• 15 दिन के अन्तर में सिंचाई करें। • मिली बग नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटेफॉस 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें। • नये बगीचे में दो लाइनों के बीच रिक्त स्थान में रबी की सब्जी लगाने की तैयारी करें।
11.	**नवम्बर** (कार्तिक-मार्गशीर्ष)	• 20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। • पौधे के पास गुड़ाई कर खरपतवार निकाले।
12.	**दिसम्बर** (मार्गशीर्ष-पौष)	• 20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। • पुराने बगीचे में जहाँ फल पकाव अवस्था पर है, विक्रय हेतु बाजार भेजें।

मिली बग

रिक्त स्थानों में सब्जी की बुवाई

रोगी टहनियों की कटाई

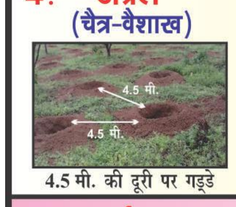

4.5 मी. की दूरी पर गड्डे

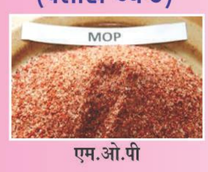

एम.ओ.पी

यूरिया

सिंचाई

पौधा रोपण

अनार की तितली

पत्ती धब्बा के लक्षण

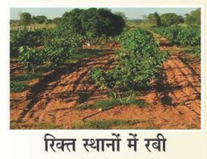
रिक्त स्थानों में रबी सब्जी की बुवाई

सिंचाई

पका हुआ अनार

सौजन्य : TDF, नाबार्ड, जयपुर ● प्रकाशक : गायत्री सेवा संस्थान, उदयपुर